Journal of Science Engineering Technology and Management Science *ISSN: 3049-0952*
Volume 03, Issue 03(S), March 2026 *www.jsetms.com*

गुरुकुल से ग्लोबल तक: भारतीय ज्ञान प्रणाली और नई शिक्षा नीति 2020

डॉ. सरिता स्वामी

प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)

शासकीय नेमीचंद जैन महाविद्यालय, दल्लीराजहरा, जिला-बालोद (छत्तीसगढ़)

1. प्रस्तावना

भारतीय सभ्यता विश्व की प्राचीनतम जीवंत सभ्यताओं में से एक रही है, जिसकी शिक्षा परंपरा अत्यंत समृद्ध, गहन और जीवनोपयोगी रही है। भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना का संचय करना नहीं था, बल्कि व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास को सुनिश्चित करना था। शिक्षा को जीवन का अभिन्न अंग माना जाता था, न कि केवल आजीविका का साधन।

प्राचीन भारत की गुरुकुल व्यवस्था इस दृष्टि से एक आदर्श मॉडल थी, जहाँ शिक्षा जीवन, आचरण, समाज और प्रकृति से गहराई से जुड़ी हुई थी। गुरुकुलों में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना था।

समय के साथ, विशेषकर औपनिवेशिक काल में, भारतीय शिक्षा प्रणाली पर पश्चिमी ढाँचे का प्रभाव बढ़ा, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा का उद्देश्य सीमित होकर रोजगारोन्मुख और परीक्षा-केंद्रित हो गया। इससे शिक्षा और जीवन के बीच एक दूरी उत्पन्न हो गई।

स्वतंत्रता के बाद भी लंबे समय तक यही व्यवस्था जारी रही। ऐसे समय में नई शिक्षा नीति 2020 एक महत्त्वपूर्ण मोड़ के रूप में सामने आती है, जो भारतीय ज्ञान प्रणाली को पुनः शिक्षा के केंद्र में लाने का प्रयास करती है।

यह शोधपत्र गुरुकुल परंपरा से लेकर आधुनिक वैश्विक शिक्षा व्यवस्था तक की यात्रा का विश्लेषण करता है तथा यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली किस प्रकार समकालीन शिक्षा की चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत कर सकती है।

2. गुरुकुल परंपरा: शिक्षा की भारतीय अवधारणा

गुरुकुल प्रणाली भारतीय शिक्षा की मूल आत्मा रही है। इस व्यवस्था में गुरु के आश्रम या निवास स्थान पर शिष्य रहकर शिक्षा ग्रहण करता था। यह शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि दैनिक जीवन के अनुभवों से जुड़ी हुई थी।

गुरुकुल शिक्षा की एक विशेषता यह थी कि इसमें शिक्षक और विद्यार्थी के बीच अत्यंत घनिष्ठ संबंध होता था। गुरु केवल अध्यापक नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, संरक्षक और आदर्श होता था। शिक्षा का वातावरण पारिवारिक और मानवीय था, जिससे शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास संभव होता था।

शिष्य गुरु के साथ रहकर अनुशासन, सेवा, आत्मसंयम, सहअस्तित्व और नैतिक मूल्यों को सीखता था। शिक्षा के साथ-साथ श्रम को भी महत्व दिया जाता था। आश्रम की व्यवस्था में विद्यार्थियों द्वारा जल लाना, लकड़ी एकत्र करना, कृषि कार्यों में सहयोग करना आदि गतिविधियाँ जीवन कौशल का हिस्सा थीं।

गुरुकुल शिक्षा का पाठ्यक्रम व्यापक और बहुविषयक था। वेद, उपनिषद, व्याकरण, गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, संगीत, नाट्य, दर्शन और नीति—सभी विषयों का अध्ययन कराया जाता था। इससे शिक्षा जीवनोपयोगी बनती थी।

यह प्रणाली आज के "Learner-Centric Education" और "Holistic Education" की अवधारणाओं से अत्यंत मेल खाती है। आधुनिक शिक्षा में जिस व्यक्तिगत शिक्षण और कौशल-आधारित अधिगम की बात की जा रही है, उसका आधार भारतीय गुरुकुल परंपरा में पहले से विद्यमान था।

3. भारतीय ज्ञान प्रणाली: स्वरूप और दार्शनिक आधार

भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल शैक्षणिक विषयों का समूह नहीं है, बल्कि यह एक समग्र जीवन-दृष्टि है। इसका दार्शनिक आधार सत्य, ऋत और धर्म की अवधारणाओं पर आधारित है।

भारतीय चिंतन में ज्ञान का उद्देश्य केवल बाह्य जगत को समझना नहीं, बल्कि आत्मबोध और आत्मविकास भी है। उपनिषदों में वर्णित "सा विद्या या विमुक्तये" का सिद्धांत शिक्षा को मुक्ति और आत्मविकास से जोड़ता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में विज्ञान और अध्यात्म के बीच कोई विरोध नहीं है। उदाहरण के लिए—

आयुर्वेद शरीर, मन और प्रकृति के संतुलन पर बल देता है।

योग शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन का माध्यम है।

न्याय और वैशेषिक दर्शन तर्क और वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित हैं।

ज्योतिष और खगोलशास्त्र में गणितीय और प्रेक्षणात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया गया।

इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली में अनुभव, तर्क और अंतर्दृष्टि—तीनों को समान महत्व दिया गया है।

यह समग्र दृष्टिकोण आधुनिक शिक्षा प्रणाली की खंडित प्रवृत्ति के विपरीत है, जहाँ ज्ञान को अलग-अलग विषयों में बाँट दिया गया है और उनके बीच अंतर्संबंधों पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है।

4. औपनिवेशिक शिक्षा और भारतीय ज्ञान परंपरा का ह्रास

औपनिवेशिक शासन के दौरान भारत में शिक्षा का उद्देश्य प्रशासनिक कार्यों के लिए कर्मचारियों का निर्माण करना था। 1835 में मैकाले के प्रसिद्ध मिनट के बाद अंग्रेज़ी माध्यम और पश्चिमी पाठ्यक्रम को प्राथमिकता दी गई।

इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं, पारंपरिक ज्ञान और स्थानीय शिक्षा संस्थानों की उपेक्षा होने लगी। गुरुकुल और पाठशालाएँ धीरे-धीरे समाप्त होने लगीं।

औपनिवेशिक शिक्षा ने एक ऐसी मानसिकता विकसित की जिसमें पश्चिमी ज्ञान को श्रेष्ठ और भारतीय ज्ञान को पिछड़ा समझा जाने लगा। यह मानसिक दासता स्वतंत्रता के बाद भी लंबे समय तक बनी रही।

इस परिवर्तन का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव यह हुआ कि शिक्षा और संस्कृति के बीच की कड़ी टूट गई। शिक्षा रोजगार तो देने लगी, पर जीवन-दृष्टि नहीं दे सकी। नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और आत्मिक विकास की उपेक्षा होने लगी।

परिणामस्वरूप आधुनिक समाज में तनाव, प्रतिस्पर्धा, मूल्य-संकट और सामाजिक विघटन जैसी समस्याएँ उभरकर सामने आईं।

5. नई शिक्षा नीति 2020: भारतीय ज्ञान प्रणाली की पुनर्स्थापना

नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक ऐतिहासिक पहल है। यह नीति शिक्षा को समग्र, लचीला, बहुविषयक और कौशल-आधारित बनाने पर बल देती है।

नीति में निम्न प्रमुख बिंदु भारतीय ज्ञान प्रणाली से जुड़े हुए हैं—

मातृभाषा में शिक्षण – प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में देने पर जोर।

बहुविषयक शिक्षा – कला, विज्ञान और व्यावसायिक शिक्षा के बीच विभाजन समाप्त करना।

अनुभवजन्य अधिगम – प्रायोगिक और परियोजना-आधारित शिक्षण को बढ़ावा।

नैतिक और मूल्य-आधारित शिक्षा – शिक्षा को चरित्र निर्माण से जोड़ना।

भारतीय कला, संस्कृति और परंपरा का समावेश – पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा के तत्वों को शामिल करना।

नई शिक्षा नीति यह स्वीकार करती है कि भारत की वैश्विक पहचान उसकी सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत से जुड़ी हुई है। इसलिए शिक्षा को भारतीयता से जोड़ना आवश्यक है।

6. भारतीय ज्ञान प्रणाली का समकालीन पुनर्पाठ और वैश्विक परिप्रेक्ष्य

समकालीन वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा प्रणाली अनेक चुनौतियों से जूझ रही है। तकनीकी प्रगति के बावजूद मानव समाज मानसिक तनाव, पर्यावरणीय संकट और सामाजिक असमानता जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है।

ऐसे समय में भारतीय ज्ञान प्रणाली का समग्र दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

आज विश्व के अनेक विश्वविद्यालय योग, ध्यान और माइंडफुलनेस जैसे विषयों को अपने पाठ्यक्रम में शामिल कर रहे हैं। यह इस बात का संकेत है कि वैश्विक समाज संतुलित जीवन-दृष्टि की तलाश में है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली मनुष्य को केवल आर्थिक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि एक नैतिक और आध्यात्मिक अस्तित्व के रूप में देखती है। यह दृष्टिकोण वैश्विक शिक्षा को मानवीय दिशा प्रदान कर सकता है।

यदि भारत अपनी ज्ञान परंपरा को वैज्ञानिक अनुसंधान और आधुनिक संदर्भ के साथ प्रस्तुत करता है, तो वह वैश्विक शिक्षा में नेतृत्व की भूमिका निभा सकता है।

7. भारतीय ज्ञान प्रणाली और समकालीन समाज की चुनौतियाँ

आधुनिक समाज में शिक्षा का अत्यधिक व्यवसायीकरण हो गया है। डिग्री और पैकेज सफलता के प्रमुख मापदंड बन गए हैं। इससे शिक्षा का मानवीय पक्ष कमजोर हुआ है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली शिक्षा को नैतिकता, कर्तव्य और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ती है। यह दृष्टिकोण आज के समय में अत्यंत आवश्यक है।

मानसिक स्वास्थ्य की बढ़ती समस्याएँ भी यह संकेत देती हैं कि शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं रह सकती। योग, ध्यान और जीवन-दर्शन जैसे तत्व विद्यार्थियों को मानसिक संतुलन प्रदान कर सकते हैं।

पर्यावरणीय संकट भी यह दर्शाता है कि प्रकृति के साथ संतुलित संबंध स्थापित करना आवश्यक है। भारतीय परंपरा में प्रकृति को पूजनीय माना गया है, जो सतत विकास की आधुनिक अवधारणा से मेल खाती है।

8. क्रियान्वयन की चुनौतियाँ और संभावनाएँ

हालाँकि नई शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान प्रणाली को सम्मिलित करने की बात कही गई है, पर इसके क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं—

प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी

प्रामाणिक पाठ्यसामग्री का अभाव

अनुसंधान की कमी

नीति और व्यवहार के बीच दूरी

पारंपरिक ज्ञान के प्रति पूर्वाग्रह

इन चुनौतियों के समाधान के लिए आवश्यक है कि—

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल किया जाए।

विश्वविद्यालयों में अंतर्विषयक अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाए।

पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक पद्धति से प्रमाणित और प्रस्तुत किया जाए।

भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता की पाठ्यसामग्री विकसित की जाए।

यदि इन उपायों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन संभव है।

9. निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि "गुरुकुल से ग्लोबल तक" की यात्रा केवल शिक्षा की संरचना में परिवर्तन नहीं, बल्कि दृष्टिकोण का परिवर्तन है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली अतीत की धरोहर ही नहीं, बल्कि भविष्य की आवश्यकता है। नई शिक्षा नीति 2020 इस दिशा में एक सशक्त प्रयास है, जो भारत को अपनी जड़ों से जोड़ते हुए वैश्विक मंच पर स्थापित करने की क्षमता रखती है।

यदि भारतीय ज्ञान प्रणाली को वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समकालीन आवश्यकताओं और वैश्विक संवाद के साथ अपनाया जाए, तो भारत न केवल आत्मनिर्भर शिक्षा मॉडल विकसित कर सकता है, बल्कि विश्व को एक मानवीय, संतुलित और मूल्य-आधारित शिक्षा दृष्टि भी प्रदान कर सकता है।

संदर्भ सूची (References)

Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Education, New Delhi.

Rao, S. K. (2019). Indian Knowledge Systems: Perspectives and Practices. PHI Learning.

Sen, A. (2005). The Argumentative Indian. Penguin Books.

Radhakrishnan, S. (1951). Indian Philosophy. George Allen & Unwin.

Nair, M. G. S. (2018). Science and Technology in Ancient India. Motilal Banarsidass.

UNESCO. (2015). Rethinking Education: Towards a Global Common Good? Paris.

Mishra, R. (2021). Indian Knowledge System and Higher Education Reforms in India. Journal of Educational Studies, 7(2).

Sharma, C. (2022). Relevance of Gurukul System in Modern Education. International Journal of Indian Education, 4(1).